Topics - 9

तृतीया तत्पुरुष

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन।

'तत्कृत' इति लुप्ततृतीयाकम्।

तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थशब्देन च सह प्राग्वत्। शङ्कुलया खण्डः शङ्कुलाखण्डः धान्येनार्थो धान्यार्थः। 'तत्कृत' इति किम् - अक्ष्णा काणः

तृतीयान्त सुबन्त का उसके द्वारा किये गये गुणवाची प्रातिपदिक के सुबन्त और 'अर्थ' प्रातिपदिक के सुबन्त के साथ समास होता है और इस समास को तत्पुरुष कहते हैं। उदाहरण के लिए 'शङ्कुलया खण्डः (सरौते से किया हुआ टुकड़ा) - इस विग्रह में तृतीयान्त 'शङ्कुला' का तत्कृत गुणवाचक सुबन्त 'खण्डः' से समास होकर 'शङ्कुलाखण्डः' रूप बनता है।

गुणवाचक प्रातिपदिक का गुण जब तृतीयान्त सुबन्त के द्वारा होगा, तभी समास होगा, अन्यथा नहीं। उदाहरण के लिए अक्ष्णा काणः में 'अक्ष्णा' तृतीयान्त सुबन्त है, और उसके अन्तपद में गुणवाचक सुबन्त 'काणः' भी है। किन्तु यहाँ गुणवाचक 'काणः' का गुण 'कानापन' तृतीयान्त सुबन्त 'अक्ष्णा' के द्वारा नहीं होता है। अक्ष्णा और काणः में

कारण - कार्य सम्बन्ध न होने के कारण समास भी नहीं होता है।

११ पूर्वसदृशसमोनार्थ कलहनिपुण मिश्रश्लक्ष्णैः । तृतीयान्तमेतैः प्राग्वत् ।
मासपूर्वः । मातृसदृशः । पितृसमः । ऊनार्थे — माषोनं कार्षापणम् । माषविकलम् ।
वाक्कलहः । आचार निपुणः । गुडमिश्रः आचारश्लक्ष्णः । मिश्रग्रहणे सोपसर्गस्यापि ग्रहणम्, 'मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ' इत्यत्रा- नुपसर्गग्रहणात् । गुडसंमिश्रा धानाः ।
। अवरस्योपसंख्यानम् मासेनावरो मासावरः

कर्तृ - करणे कृता बहुलम् ।

कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत् । हरिणा त्रातः - हरित्रातः
नखैर्भिन्नः — नखभिन्नः ।

कर्ता और करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त का सुबन्त कृदन्त (जिसके अन्त में कोई 'कृत्' प्रत्यय हो) के साथ बहुलता से समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं। बहुलता से होने के कारण समास कभी होता है और कभी नहीं भी। उदाहरण के लिए 'हरिणा त्रातः (हरि के द्वारा रक्षित) इस विग्रह में

कर्ता अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त 'हरिणा' का कृदन्त 'त्रातः' के साथ समास होकर 'हरित्रातः' रूप बनता है। इसी प्रकार 'नखैर्भिन्नः' (नखों से फाड़ा हुआ) में करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त 'नखैः' का कृदन्त 'भिन्न' से समास हो 'नखभिन्नः' रूप सिद्ध होता है किन्तु कभी-कभी कर्ता और करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त का कृदन्त के साथ समास नहीं होता है। उदाहरण के लिए 'छात्रेण लूनवान्' में कर्ता अर्थ में वर्तमान और 'परशुना छिन्नवान्' में करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त का कृदन्त के साथ समास नहीं हुआ है।

(५७) कृदुग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्।

नखैर्निर्भिन्नः - नखनिर्भिन्नः।

कर्ता और करण अर्थ में वर्तमान तृतीयान्त सुबन्त का गति कारकपूर्व कृदन्त के ही साथ समास होता है। उदाहरण के लिए 'नखैर्निर्भिन्न' इस विग्रह में गति-('निर्' पूर्वक कृदन्त 'भिन्नः' के साथ 'नखैः' का समास होकर 'नखनिर्भिन्नः' रूप बनता है।